Raath Shiksha Vikas Samiti (Regd.)

Raath Mahavidyalaya Paithani

PO- Paithani, Patti- Kandarsuyn, District- Pauri Garhwal 246123
Affiliated to HNBGU (Central University) Srinagar Garhwal
Email – rmvpaithani@gmail.com

Letter No. .....

Date 05-04-2024

Research Papers published by Teacher during the last five year				
Name of the Teacher	**Title of the Paper**	**Name of the Journal**	**Year of Publication**	**ISSN number**
Sri. Arvind Kumar	BEd Prashikshanarthiyou me Sthanik Sansadhano ki Upyogita evm Parayavaniya Samsyaon ki Jagarukata ka Adhyayan	International Journal of Research and analytical Reviews	2023	E- 2348-1269, P- 2349-5138
Dr. Birendra Chand	Kautilya ka Saptang Siddhant	Sangam	2022	2321-8037
Dr. Birendra Chand	Cloud Storage Kya Hai ?	Shoudh Sindhu	2020	2454-5902
Dr. Shyam Mohan Singh	Adhinaitik Chintan me Antahpragyavadi Vichardhara	Darshanik Traimasik	2020	0974-8849
Dr. Durgesh Nandani	Apadaon ke Sandarbh me : Uttarakhand	International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR)	2019	E- 2348-1269, P- 2349-5138
Dr. Durgesh Nandani	Uttarakhand ki Kedarnath Apada ka Janmanas par Tatkalin Prabhav	International journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR)	2019	E- 2348-1269, P- 2349-5138
Dr. Durgesh Nandani	Uttarakhand ki Vibhats Vibhishika : Kedarnath Trasadi	International journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR)	2019	E- 2348-1269, P- 2349-5138
Dr. Shyam Mohan Singh	Samkalin Naitik Darshan me Prakritvadi Dristi	Shri Prabhu Pratibha	2018	0974-522X

Principal
Raath Mahavidyalaya Paithani
Pauri Garhwal (Uttarakhand)

IJRAR.ORG

E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में स्थानिक संसाधनों की उपयोगिता एंव पर्यावरणीय समस्याओं की जागरुकता का अध्ययन

अरविन्द कुमार

असि०प्रोफेसर बी०एड० विभाग रा० महाविद्यालय पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल उत्तराखण्ड

शोध सारांश

देश व समाज के निर्माण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जो कि सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए विभिन्न प्रकार के मानव संसाधनों का सृजन करती है। इस प्रक्रिया में शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत भावी शिक्षकों को स्थानिक पर्यावरण का ज्ञान होना अति आवश्यक है। जिसके द्वारा वे अपने विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं को पर्यावरण संरक्षण की व्यवहारिक व उपयोगी शिक्षा प्रदान कर सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है, कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को स्थानिक संसाधनों के सन्दर्भ में क्या–क्या जानकारी है तथा उनका स्थानिक पर्यावरणीय प्रदूषण के विषय में जागरुकता का स्तर कितना है।

प्रस्तावना

शिक्षा

प्रत्येक व्यक्ति के सामाजिक, मानसिक, शारीरिक विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा के द्वारा विभिन्न प्रकार के ज्ञान, कला, कौशलों, का विकास किया जाता है। जो कि व्यक्ति को अपने भावी जीवन में सफलतापूर्वक एंव प्रभावपूर्ण ढ़ग से जीवन जीने में सहायक है।

समाज व देश में शिक्षक की भूमिका

किसी भी देश के विकास में वहां के संसाधनों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। प्राकृतिक संसाधनों के साथ–साथ मानव संसाधनों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहता है, जिनके निर्माण में गुणवत्तापरख शिक्षा का होना अति आवश्यक है। शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में शिक्षक अपने ज्ञान व शिक्षण कौशलों से भावी देश के नागरिकों का निमार्ण करता है। जो कि अपने भावी जीवन में देश व समाज के लिए उपयोगी व सृजनशील

स्व प्रमाणित

02/05/2023

संगम Impact Factor : 2.636
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed & Referred Journal
सेवा देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध की समर्पित मासिक

ISSN : 2321-8937
SANGAM
Vol. 10, Issue 5(1)
पृष्ठ 20-27

कौटिल्य का सप्तांग सिद्धान्त

डॉ० वीरेन्द्र चन्द
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, रा० महा० पैठाणी।

****

प्राचीन भारत के महान कूटनीतिज्ञ, राजनीतिज्ञ दूरदर्शी तथा प्रतिभाशाली युद्धशास्त्री आचार्य कौटिल्य ने अपने युद्ध सम्बन्धी विचारों तथा युद्ध दर्शन का अर्थशास्त्र नामक ग्रन्थमाला मे पिरोकर रखा है।

आचार्य कौटिल्य ने अपने अमूल्य ग्रन्थ मे विभिन्न प्रकार के सेनांगो, सैन्य संगठनों, युद्ध विभागों, शास्त्रास्त्रों शिविर एवं दुर्गों का सजीव चित्र खींचा अपने विस्तृत ज्ञान द्वारा आचार्य महोदय ने मौर्य साम्राज्य की सैन्य पद्धति को चरम सीमा तक पहुँचा दिया। इस नीति निपुण कूटनीतिज्ञ तथा दूरदर्शी ब्राह्मण को विष्णु गुप्त नाम की संज्ञा से भी विभूषित किया गया, उन्ही प्रयत्नों के फलस्वरूप भारत का विकास एक राष्ट्र के रूप में हो सका।

कौटिल्य के अनुसार राज्य की सात प्रकृतियों में राज प्रमुख है, जिस प्रकार का आचरण राजा का होगा उसके अमात्य आदि भी उसी प्रकार के आचरण करेंगे प्रजा की उन्नति और अवनति राजा पर ही निर्भर करती है। चूंकि राज्य की सुरक्षा सेना पर आश्रित होती है। अतः दूसरा स्थान बल (सेना) ही राजा की शक्ति माना है।

अर्थशास्त्र के रचयिता कौटिल्य के जन्म नाम और जीवन के सम्बन्ध में प्रामाणिक रूप से कुछ भी कहा जाना सम्भव नही है, लेकिन उपलब्ध सामग्री के आधार पर कुछ विद्वान उनका जन्म 400 ई०पू० तो कुछ 325 ई०पू० में मानते हैं।

उनका जन्म का नाम विष्णुगुप्त माना जाता है जिसकी पुष्टि स्वंय उन्होने अपने ग्रन्थ अर्थशास्त्र में की है उनका चाणक्य नाम चणक के पुत्र होने के कारण तथा कौटल गोत्र का होने के कारण कौटिल्य के नाम से भी जाना जाता है।

राज्य को सप्त प्रकृति युक्त माना है, राज्य की ये सात प्रकृतियाँ जो उसके विभिन्न अंगो का निर्माण करती हैं, उन्हे निम्नलिखित रूप से विश्लेषित किया जा सकता है।

पहली प्रकृति या अंग राज्य का राजा या स्वामी है, दूसरा अंग अमात्य (मन्त्री) तीसरा अंग जनपद चौथा अंग दुर्ग पाँचवा अंग कोष, छठा अंग दण्ड तथा सातवा अंग मित्र है। इस तरह कौटिल्य के अनुसार राज्य एक ऐसा शरीर है, जिसके उपर्युक्त सात अंग होते हैं, ये सात प्रकृति या अंग मिलकर राजनीतिक सन्तुलन बनाये

शोध बिन्दु
वर्ष 6, अंक 2, दिसम्बर 2020

R.N.I. UPBIL 04509/15/01/2015
ISSN 2454-5902

Paper Accepted : 15-09-2020

क्लाउड स्टोरेज (Cloud Storage) क्या है?

डॉ० वीरेन्द्र चन्द्र*

Mobile, Computer, Laptop और Pan Drive इत्यादि मे अपने Data स्टोर करते है यह डिजिटल माध्यम है, वही Cloud Storage Data स्टोर करने का एक माध्यम है, इसमे Data आपके फोन मे नही होता है उस Data को हम ऑनलाइन अपलोड करते है।

आपके फोन या Computer का डिजिटल Data किसी दूसरी कम्पनी के सर्वर मे स्टोर होता है और वह Data को एक्सेस करता है, उस Data का मैनेजमेंट होस्टिंग कम्पनी के पास होता है इनमे Data स्टोर के लिए एप्लीकेशन का सहारा लेना पड़ता है, Cloud Storage मे Data स्टोर करने के लिए बहुत सी कम्पनियों द्वारा प्रदान किया जाता है। जब हम Mobile और Computer और Pan Drive मे Data Reset किया जाता है, वह Data हमारा कभी भी डिलीट हो सकता है और जो हम Cloud Storage मे Data स्टोर करेंगे वह Data सेफ रहेगा।

जो Data हम Computer और Laptop और Pan Drive मे स्टोर कर रहे है उस Data को स्टोर करने के लिए हमे कोई विशेष एप्लीकेशन की जरूरत नही होती है और जब हम Cloud Storage में जो Data स्टोर करेंगे उसके लिए हमे एक एप्लीकेशन के माध्यम से ही उस Data को एक्सेस किया जा सकता है और Cloud Storage का उपयोग हम Mobile और Computer मे भी कर सकते है।

इसके लिए आपको इस एप्लीकेशन की जरूरत पड़ेगी।

Cloud Storage का उपयोग :–

Cloud Storage मे Data स्टोर करने के लिए हमे होस्टिंग वेबसाइट पर ID की जरूरत पड़ती है। जिस तरह हम Email ID और Facebook ID मे पासवर्ड और ID दोनो की जरूरत होती है, उसी प्रकार Cloud Storage मे भी ID और पासवर्ड की जरूरत होती है और इसके अलावा आपके फोन, लैपटाप, टैबलेट और डिवाइस मे इंटरनेट सेवा एक्टिवेट होनी चाहिए।

Cloud Storage के प्रकार :–

1. Google Drive
2. One Drive
3. Dropdox
4. Amazon Cloud drive
5. Apple I Cloud Drive
6. Back blaze
7. Hidrive
8. Hubic
9. I Drive
10. Jump Share
11. Mega

ये सबसे ज्यादा चलने वाली Cloud Storage drive है और Cloud Storage कैसे इस्तेमाल करेंगे तो आपको पता होगा कि Google drive का Cloud Storage सेवा है यह आपके पास से ही In Stalled होती है। Google drive मे आप अपने Gmail की Id और पासवर्ड से लॉगिन कर सकते है।

Cloud Storage से हम अपना Data आनलाइन स्टोर कर सकते हैं आनलाइन स्टोर किये डाटा को हम कही से भी Access Dataddj सकते है।

जब हम Mobile या लैपटॉप मे जो Data स्टोर कर रहे है जब यह कभी भी खराब हो सकता है और जो हम Cloud Storage के दौरान Data स्टोर करेंगे उस Data को हम किसी भी टाइम बैकअप ले सकते है।

इसमें डाटा खराब नही होता है। इसलिए Cloud Storage एक बेस्ट स्टोरेज है। इसमें हम अपने डाटा

*असि०प्रो०, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन (सैन्य विज्ञान), रा० महाविद्यालय पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

www.abdpindia.net

ISSN: 0974-8849
अभिनिर्देशित
(Peer Reviewed)

दार्शनिक त्रैमासिक

UGC Care List, Group-I : Recently Added Jouranls, Sl. No.-4

वर्ष-66 अंक-1 जनवरी-मार्च, 2020

अनुक्रमणिका

1. समाज दर्शन की प्रासंगिकता : वर्तमान भारतीय संदर्भ में
डॉ. आलोक टण्डन 1–7
2. सरोगेसी : व्यावहारिक नीतिशास्त्र की एक प्रमुख समस्या
डॉ. विश्वामित्र पाण्डेय 8–13
3. पूँजीवाद की मार्क्सवादी समालोचना
डॉ. ईश्वर चन्द 14–20
4. नव्य न्याय का भाषा विश्लेषण
राजीव कुमार 21–26
5. स्वदेशी और स्वराज का दर्शन : गाँधीजी की दृष्टि में
डॉ. रागिनी कुमारी 27–35
6. स्वदेशी से स्वराज : गांधीवादी अवधारणा
डॉ. विवेक कुमार पाण्डेय 36–46
7. दयानन्द का समाज दर्शन
डॉ. राजेश कुमार तिवारी 47–53
8. अधिनैतिक चिन्तन में अन्तःप्रज्ञावादी विचारधारा
डॉ. श्याम मोहन सिंह 54–61
9. मानवीय मूल्य और व्यावसायिक नीतिशास्त्र
डॉ. मुकेश कुमार चौरसिया 62–68

आपदाओं के संदर्भ में : उत्तराखण्ड

[1]डॉ0 दुर्गेश नन्दिनी (Dr. Durgesh Nandini)

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर(बी0एड0)

राठ महाविद्यालय पैठाणी

पौडी गढवाल, उत्तराखण्ड

Abstract : उत्तराखड भारत के हिमालयी राज्यों में से एक है। भारत की उत्तरी दिशा में प्रहरी की भांति खड़ी ऊँची हिमालय पर्वत श्रृखला का विस्तार भारत के उत्तर–पश्चिम में स्थित हिन्दुकश पर्वत से लेकर भारत के दक्षिण पश्चिम में स्थित म्यांमार देश तक लगभग 2400 किमी0 का है। हिमालय पर्वत श्रेणीयों में भारत के कुछ राज्य अवस्थित है। ये राज्य हैं – जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, अरूणांचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड, सिक्किम, त्रिपुरा एवं असम। उल्लेखित सभी राज्यों को पर्वतीय राज्यों अथवा हिमालयी राज्यों की संज्ञा दी जाती है। उत्तराखंड ग्याहरवां पर्वतीय अथवा हिमालयी राज्य बना। अन्य हिमालयी राज्यों की भांति उत्तराखण्ड प्राकृतिक विरासतों से समृद्ध राज्य है। प्रकृति के बेहद करीब होने के कारण ही शायद यहॉ प्रकृति की सामान्य प्राकृतिक गतिविधियॉ एवं प्राकृतिक हलचल अधिक दिखायी देती हैं। हिमालयी क्षेत्रों के लिये तेज बारिश होना, आकाशीय बिजली का गिरना, बादल फटना, भूस्खलन, हिमस्खलन, भूकंप आदि सामान्य प्राकृतिक क्रियायें एवं हलचल है लेकिन ये सामान्य प्राकृतिक घटनायें असंख्य बार जनमानस के लिये विपत्ति बनकर आती है, विनाश का कारण बन जाती है और आपदा की स्थिति को जन्म देती हैं। उत्तराखण्ड प्राकृतिक आपदाओं के संदर्भ में बेहद संवेदनशील क्षेत्रों में से एक है। लगभग प्रतिवर्ष प्राकृतिक गतिविधियां यहॉ जन–मानस के लिये खतरे और तनाम परेशानियां उत्पन्न करती है, तथा आपदा का रूप ले लेती है । उत्तराखण्ड वह भूमि है जहॉ देवता बसते हैं। विश्व भर मे देवभूमि नाम से प्रसिद्ध उत्तराखण्ड आज हर वर्ष घटित होने वाली छोटे–बड़े दैवीय प्रकोपों एवं प्राकृतिक आपदाओं के खतरों के लिये विश्व भर में प्रसिद्ध हो रहा है ।

Keywords **- उत्तराखण्ड, आपदा, प्राकृतिक आपदा, बादल फटना, आकस्मिक बाढ, भूस्खलन, हिमस्खलन, भूकंप.**

प्रस्तावना

"आपदा" एक प्राकृतिक एवं मानवजनित घटना है, जिसके परिणामस्वरूप जीव जगत में व्यापक क्षति होती हैं । ये ऐसी घटनायें होती हैं जो पर्यावरण के जैविक एवं अजैविक संघटकों की सहनशक्ति से बहुत अधिक होती है । अतः इनके साथ तथा इनसे उत्पन्न परिवर्तनों के साथ समायोजन करना बेहद कठिन हो जाता है। प्राकृतिक रूप से जब ऐसी घटनाएं घटती हैं, जो जीव जगत में व्यापक और गंभीर नुकसान का कारण बनती हैं तो आपदा का यह रूप "प्राकृतिक आपदा" कहलाता है।

भारत का इतिहास प्रकृति की मार से अछूता नहीं भारत ने अपने अतीत में प्रकृति के ऐसे दंश झेले हैं जिनका उल्लेख वर्तमान में भी सिरहन पैदा करता है। अपने सौन्य रूप में प्रकृति मनोरम है, लेकिन प्रकृति का क्रोधित स्वरूप मानव विकास एवं अस्तित्व को चौपट कर देता है । भारत प्राकृतिक रूप से समृद्ध राष्ट्र है। प्रकृति ने अपनी अनेकों मनोरम् छटायें भारत को उपहार स्वरूप दी हैं । भारत में पर्वत, पठार, मैदान, रेगिस्तान, समुद्री तट, बड़े–बड़े घास के मैदान, विभिन्न प्रकार के जंगल आदि लगभग हर तरह की प्राकृतिक परिस्थितियां हैं।

प्रकृति द्वारा अनुदानित यह राष्ट्र सम्भवतः प्रकृति तथा, प्रकृति के द्वारा दिये गये उपहारों का सम्मान नहीं कर पाया । और विकास की सीढ़ी चढ़ने के मद में प्रकृति को ही रौंदने लगा । फलतः प्रकृति प्रतिउत्तर स्वरूप बार–बार भारतवर्ष को चोट देती रही, और ये चोटें बड़ी प्राकृतिक आपदाओं एवं विभीषिका के रूप में अपने चिन्ह छोड़ती जाती है।

आपदाओं के संदर्भ में भारत का दुःखद इतिहास रहा है। भारत एशिया महाद्वीप में स्थित है जहॉ विश्व की लगभग 40 प्रतिशत से अधिक प्राकृतिक आपदायें आती हैं । यू0एन0 की रिपोर्ट "द ह्यूमैन कॉस्ट आफ वेदर रिलेटेड डिसास्टर (2015) में दिये गये आंकड़ों के अनुसार मौसम सम्बन्धी, प्राकतिक आपदाओं से प्रभावित राष्ट्रो में भारत सबसे बड़ा राष्ट्र है(प्रभावित लोगों की संख्या के आधार पर)।

शोध सामग्री और शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु मैंने ऑनलाइन उपलब्ध विभिन्न शोध पत्रों, प्रकाशित रिपोर्ट एवं उपलब्ध आंकडों का अध्ययन एवं सर्वेक्षण किया है।

उत्तराखण्ड एवं आपदायें–

उत्तराखण्ड भारत के उत्तर में हिमालय पर्वतमालाओं की गोद में बसा एक छोटा सा राज्य है। प्राकृतिक सौन्दर्य का जीवन्त प्रतीक माना जाने वाला यह राज्य अपनी गरिमामयी , सभ्यता एवं संस्कृति के लिये विश्व भर में प्रसिद्ध है। प्राचीन काल से ही यहॉ प्रकृति और पुरूष के मध्य ऐसा अद्भुत सामंजस्य रहा है जिसने स्वस्थ एवं शालीन पर्यावरण की रचना की और सम्भवतः इसीलिये ऋषि–मुनियों एवं मनीषियों को यह भूमि सम्मोहित करती रही । चारों और फैली

उत्तराखण्ड की केदारनाथ आपदा का जनमानस पर तत्कालीन प्रभाव

[1]डॉ0 दुर्गेश नन्दिनी (Dr. Durgesh Nandini)

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर(बी0एड0)

रा0 महाविद्यालय पैठाणी

पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

सारांश: किसी भी स्थान पर आने वाली आपदा उस स्थान के भूगोल, पर्यावरण, पर्यावरणीय तंत्र, उस स्थान के जीव जगत, जनमानस और जनमानस के जीवन से जुड़े विभिन्न पक्षों पर दुष्प्रभाव डालती है। आपदायें किसी भी भौगोलिक क्षेत्र में निवास करने वाले मानव समाज को विकास की दृष्टि से पीछे धकेल देती है।

आपदा का दुष्प्रभाव यदि जनमानस के संदर्भ में देखा जाये तो आपदा का दुष्प्रभाव समाज की जनसंख्या, उस जनसंख्या के मानसिक, शारीरिक और भावात्मक पक्ष पर पड़ता है। आपदाएं समाज की स्वास्थ्य, शिक्षा, एवं अन्य लोक सेवा व्यवस्थाओं की भी कमर तोड़ देती हैं। समाज की आर्थिक व्यवस्था आपदा से चरमरा जाती हैं। आपदा हमेशा समाज में कुव्यवस्थित परिस्थिति उत्पन्न करती है । आपदा समाज में बेरोजगारी, पलायन, पुनः स्थापन आदि सामाजिक समस्याओं को बढ़ावा देती हैं आपदा तात्कालिक और दीर्घकालिक दुष्परिणामों को जन्म देती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में आपदा के दुष्परिणामों का अध्ययन जून 2013 में उत्तराखण्ड में आयी केदारनाथ आपदा के संदर्भ में किया गया है।

Keywords - प्राकृतिक आपदा, उत्तराखण्ड, केदारनाथ आपदा, प्रभाव, जनमानस।

प्रस्तावना

किसी भी स्थान में जब प्रकृति, प्रकोप बन कहर बरसाती है। तब न केवल उस स्थान के भूगोल को नुकसान पहुँचता है अपितु उस भौगोलिक क्षेत्र में निवास करने वाले जनमानस और उस जनमानस के जीवन से जुड़े विभिन्न पक्षों पर भी प्राकृतिक प्रकोप का ऋणात्मक प्रभाव पड़ता है। अन्य शब्दों में यदि कहें तो पूरे समाज और समाज के हर पक्ष को आपदाओं से नुकसान पहुँचता है।

आपदा का दुष्प्रभाव समाज की जनसंख्या, उस जनसंख्या के मानसिक, शारीरिक और भावात्मक पक्ष पर पड़ता है। आपदाएं समाज की स्वास्थ्य, शिक्षा, एवं अन्य लोक सेवा व्यवस्थाओं की कमर तोड़ देती हैं। समाज की आर्थिक व्यवस्था आपदा से चरमरा जाती हैं। आपदा हमेशा समाज में कुव्यवस्थित परिस्थिति उत्पन्न करती है । आपदा समाज में बेरोजगारी, पलायन, पुनः स्थापन आदि सामाजिक समस्याओं को बढ़ावा देती हैं आपदा तात्कालिक और दीर्घकालिक दुष्परिणामों को जन्म देती हैं। भारत में आयी भीषणतम् आपदाओं में से एक है माह जून, सन् 2013 में आयी उत्तराखण्ड की ''केदारनाथ आपदा''।

बंगाल की खाड़ी और अरब सागर से उठे मानसून बादल जब हिमालयी क्षेत्रों में पहुँचते है तब उनका हिमालय से टकराकर विस्फोट होने की संभावना बढ़ जाती है । इसीलिये हिमालयी क्षेत्रों में अक्सर बादल–फटने की घटनायें होती रहती है। हिमालयी क्षेत्रों में हिमाचल प्रदेश में सर्वाधिक बादल–फटने की घटनायें होती है। उत्तराखण्ड भी इस संदर्भ में बेहद संवेदनशीलता रखता है यहाँ लगभग हर वर्ष बादलों के फटने से अपार जन–धन की हानि होती है। बादल फटने की इन्हीं घटनाओं ने उत्तराखण्ड की ''केदारनाथ त्रासदी'' को जन्म दिया।

जून 2013 में दक्षिण–पश्चिम मानसून उत्तराखण्ड में लगभग 15 दिन पहले पहुँच गया। यह दक्षिण–पश्चिम मानसून, पश्चिमी विक्षोभ से टकराकर सम्पूर्ण उत्तराखण्ड–हिमालयी क्षेत्रों में घनघोर बादलों के रूप में फैल गया। सन् 2013, 14 जून से उत्तराखण्ड में शुरू हुयी वर्षा, 15–16–17 तारीख तक यूँ बढ़ गयी मानों आकाश से नदियां भूतल में उतर रही हो। इस दौरान जगह जगह बादल फट रहे थे। इससे उत्तराखण्ड राज्य में हुयी वर्षा, (340 मिलीमीटर) सामान्य बेंचमार्क 65.9 मिली मीटर से 37.5 प्रतिशत ज्यादा थी। कम समय में उत्तराखण्ड के हिमालयी क्षेत्रों में असीमित जल उतरने के कारण वहाँ बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गयी । अतिवृष्टि के कारण उत्तराखण्ड की नदियां और हर जल स्रोत पानी के प्रचंड बहाव के साथ विकृत होकर बहने लगा। कम समय में अत्यधिक पानी आसमान से उतरने के कारण उत्पन्न बाढ़ और उससे उत्पन्न भू–स्खलन तथा भूकटाव से मलबा, बोल्डर, हिमखण्ड आदि भी नदियों के साथ बहने लगे। मलबा, पत्थरों, बोल्डरों, हिमखंडों के साथ बहने से असामान्य हुयी इन प्रलयंकारी नदियों ने उत्तराखण्ड के उच्च तथा मध्य हिमालयी क्षेत्रों में भयंकर तबाही मचाई । इस आपदा ने चार धाम यात्रा हेतु उत्तराखण्ड आये हजारों यात्रियों की जान लील ली । इसके अलावा स्थानीय समुदाय के लिये भी जान–माल की हानि कर बड़े पैमाने पर समस्याओं का अंबार खड़ा कर दिया ।

शोध सामग्री और शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु ऑनलाइन उपलब्ध विभिन्न शोध पत्रों, प्रकाशित रिपोर्ट, समाचार पत्रों एवं उपलब्ध आंकड़ों का अध्ययन एवं सर्वेक्षण किया है, साथ ही सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त किये व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया गया है।

उत्तराखण्ड की केदारनाथ आपदा का जनमानस पर प्रभाव –

उत्तराखण्ड में जून 2013 को आयी आपदा ने उत्तराखण्ड के ऊँचे हिमालयी पहाड़ों से ऋषिकेश, हरिद्वार के मैदानी इलाकों और इससे भी आगे के क्षेत्रों को भी प्रभावित किया। इस आपदा ने उत्तराखण्ड में, मानव–जीवन, पशु–जीवन, कृषि, भवनों, इमारतों, व्यावसायिक इमारतों, सामुदायिक भवनों, विभिन्न निर्माणों आदि को भी गम्भीर क्षति पहुंचायी। इन क्षतियों का विवरण निम्न हैं–

केदारनाथ की भीषण आपदा में बहुत से तीर्थयात्रियों एवं स्थानीय लोगों ने अपनी जान गंवाई । India Disaster Report -2013 के अनुसार 9 मई 2014 तक राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर इस आपदा में 169 लोग मारे गये, एवं 4021 लोग लापता हैं जिन्हें मृतक ही माना गया है, एवं 236 लोग इस आपदा में घायल हुये । आपदा के दौरान मानवीय जनसंख्या को हुयी क्षति का विवरण निम्न है –

- कुल मृतक व्यक्ति – 169
- कुल गुमशुदा व्यक्ति – 4021 (जिन्हें मृतक माना गया है)
- कुल घायल व्यक्ति – 236
- घायल व्यक्ति (एक सप्ताह से अधिक चिकित्सालय में भर्ती) – 86
- घायल व्यक्ति (एक सप्ताह से कम चिकित्सालय में भर्ती) – 150

इस आपदा में मृतक एवं गुमशुदा (4021) लोगों की इतनी बड़ी संख्या में से अधिकांश लोग तीर्थाटन के लिये देव–भूमि उत्तराखण्ड आये थे जो फिर कभी अपने घर न लौट सके। इस आपदा में गुमशुदा लोगों की सर्वाधिक संख्या उत्तर प्रदेश राज्य के निवासियों की हैं । उत्तर–प्रदेश के सर्वाधिक 1150 लोग इस आपदा के बाद गुमशुदा हैं।उत्तराखण्ड से 846 लोग इस आपदा के दौरान गुमशुदा हुये और उत्तर प्रदेश के बाद उत्तराखण्ड को ही इतनी बड़ी संख्या में मानवीय –क्षति उठानी पड़ी । उत्तराखण्ड के बाद मध्यप्रदेश से 542 लोगों की गुमशुदगी दर्ज है।

गुमशुदा लोगों (जिन्हें मृतक ही मान लिया गया है) का राज्यवार विवरण निम्न है –

उत्तराखण्ड की वीभत्स विभीषिका :केदारनाथ त्रासदी

[1]डॉ0 दुर्गेश नन्दिनी (Dr. Durgesh Nandini)

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर(बी0एड0)
राट महाविद्यालय पैठाणी
पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

सारांक्षः अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के लिये विश्व भर में प्रसिद्ध भारत के हिमालयी राज्यों में से एक है उत्तराखण्ड। हिमालयी राज्यों की विशेषता है प्राकृतिक समृद्धता। अन्य हिमालयी राज्यों की भांति प्रकृति की अनुकम्पा उत्तराखण्ड में भी पग–पग पर परिलक्षित होती है। प्रकृति की गोद में बसे होने के कारण ही यहाँ सामान्य प्राकृतिक गतिविधियाँ जैसे वर्षा, बादल फटना, बज्रपात, भूकंप, आकस्मिक बाढ़, भूस्खलन, हिमस्खलन आदि अधिकता से देखी जा सकती हैं। लेकिन कभी–कभी ये सामान्य प्राकृतिक हलचल असामान्य होकर प्राकृतिक आपदाओं का रूप ले लेती हैं तथा इन क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों के लिये घोर संकट उत्पन्न कर देती हैं। उत्तराखण्ड ने सैकड़ों बार प्राकृतिक प्रकोप का दंश झेला है। उत्तराखण्ड पर सबसे वीभत्स प्राकृतिक प्रहारों में से एक है ''केदारनाथ त्रासदी''। 16–17 जून 2013 को उत्तराखण्ड राज्य में हुयी मूसलाधार वर्षा एवं जगह–जगह बादल फटने की वजह से बाढ़, आकस्मिक –बाढ़, भूस्खलन, भू–धंसाव, भू–कटाव, पहाड़ों से गिरते पत्थर एवं बोल्डर, इन सबने वास्तव में प्रलयकारी स्थिति पैदा कर दी थी । इस प्रलय में कई जिंदगियां हाथो से निकल गयी, मानवीय सम्पत्ति एवं निर्माण कार्यों का व्यापक नुकसान हुआ साथ ही साथ उत्तराखण्ड के प्रभावित क्षेत्रों की पारिस्थितिकी तक गड़बड़ा गयी । इस दौरान उत्तराखण्ड के 13 जिलों में से 5 जिले –रूद्रप्रयाग, चमोली, उत्तरकाशी, पिथौरागढ़ एवं बागेश्वर प्रभावित हुए । लेकिन इस जल–प्रलय ने सर्वाधिक तबाही रूद्रप्रयाग जनपद में अवस्थित हिन्दुओं के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल केदारनाथ में मचायी । इसलिये इस आपदा को ''केदारनाथ आपदा'' नाम दिया गया । प्रस्तुत शोध पत्र केदारनाथ आपदा के संदर्भ में जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास मात्र है।

Keywords - आपदा, प्राकृतिक आपदा, उत्तराखण्ड, केदारनाथ आपदा, क्षति

प्रस्तावना

''आपदा'' मानव द्वारा सम्पादित या प्रकृति की वे प्रक्रियायें हैं जो उन घटनाओं का रूप ले लेती हैं जो पर्यावरण के जैविक तथा अजैविक घटकों के लिये संकट या समस्यायें उत्पन्न कर देती हैं या उन्हें गम्भीर नुकसान पहुंचाती हैं तथा जिन नुकसानों से आसानी से उबरना बहुत मुश्किल हो जाता है। जब इस प्रकार के नुकसान प्राकृतिक घटनाओं के कारण होते हैं तब प्रकृति द्वारा हुये नुकसान की यह स्थिति ''प्राकृतिक आपदा'' कहलाती है।

अर्थात जब प्रकृति की सामान्य घटनायें या प्रक्रियायें असामान्य रूप ले लेती है, तब यह विभिन्न पर्यावरणीय जैविक तथा अजैविक घटकों के लिए समस्या या संकट उत्पन्न कर देती है। संकट की यही स्थिति ''प्राकृतिक संकट'' या ''प्राकृतिक आपदा'' कहलाती है।

अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के लिये विश्व भर में प्रसिद्ध भारत के हिमालयी राज्यों में से एक है उत्तराखण्ड। हिमालयी राज्यों की विशेषता है प्राकृतिक समृद्धता। मानों प्रकृति स्वयं इनका पालन पोषण करती हो। अन्य हिमालयी राज्यों की भांति प्रकृति की अनुकम्पा उत्तराखण्ड में भी पग–पग पर परिलक्षित होती है। प्रकृति की गोद में बसे होने के कारण ही यहाँ सामान्य प्राकृतिक गतिविधियाँ जैसे वर्षा, बादल फटना, बज्रपात, भूकंप, आकस्मिक बाढ़, भूस्खलन, हिमस्खलन आदि अधिक होती हैं। लेकिन कभी–कभी ये सामान्य प्राकृतिक हलचल असामान्य होकर इन क्षेत्रों में निवास करने वाले लोंगों के लिये घोर संकट उत्पन्न कर देती हैं।

उत्तराखण्ड ने न जाने कितनी बार ऐसी ही असामान्य प्राकृतिक हलचलों से उत्पन्न हुये घोर नुकसान के दंश को झेला है। सन् 1991 और 1999 में आया उत्तरकाशी और चमोली का विनाशकारी भूकम्प, अगस्त 1998 में रूद्रप्रयाग जिले के ऊखीमठ ब्लॉक में काली–गंगा घाटी एवं मदमहेश्वर में हुये भूस्खलन में कुल 103 लोगों की मौते हुयी, 18 अगस्त 1998 पिथौरागढ़ जनपद में बसे गाँव मालपा पर भूस्खलन कहर बन कर बरपा और एवं 210 लोगों को लील गया। 21 सितम्बर 2010 गंगा–अलकनंदा घाटी में आये प्रचंड भूस्खलन से 220 लोग काल के मुख में समा गये। 14 सितम्बर 2012 में रूद्रप्रयाग जनपद के ऊखीमठ में हुये भूस्खलन के मलबे ने 68 लोगों को मौत की नींद सुला दिया आदि ये उत्तराखण्ड में आयी कुछेक ऐसी प्राकृतिक त्रासदियां जिनका जिक्र आज भी सिरहन पैदा करता है। उत्तराखण्ड की ऐसी ही वीभत्स त्रासदियों में से एक रही ''केदारनाथ आपदा''।

शोध सामग्री और शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु ऑनलाइन उपलब्ध विभिन्न शोध पत्रों, प्रकाशित रिपोर्ट, किताबों एवं उपलब्ध आंकड़ों का अध्ययन एवं सर्वेक्षण किया है।

केदारनाथ आपदा–

सन् 2013, जून तृतीय सप्ताह की 17–18 तारीख, 53,484 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल पर फैले हिमालयी राज्य, जिसका 93 प्रतिशत भाग वनों से आच्छादित है और जिसका अधिकाश भाग ऊंची हिमालयी चोटियों एवं ग्लेशियरों से ढका हुआ है : उत्तराखण्ड, पर मानों तबाही गिद्धों की तरह झपट पड़ी हो। मानो प्रकृति क्रोध में सब कुछ लील लेने को आमदा हो।

तमाम समाचार चैनलों में उत्तराखण्ड में प्रकृति के वीभत्स ताड़व का साक्षात् प्रसारण हो रहा था ' बड़े –बड़े भवनों, इमारतों को पल –भर में उफनती नदियों का ग्रास बनते हुये कई कैमरों ने कैद कर लिया था । इन सबका प्रसारण रोंगटे खड़े कर देने वाला था । 17–18 जून व उसके बाद के दिवसों के तमाम समाचार पत्र–पत्रिकाओं, शिव की नगरी केदारनाथ (उत्तराखण्ड) एवं उत्तराखण्ड के अन्य कई हिस्सों में हुयी प्रकृति की इस तांडव–लीला के वर्णन से पटे हुये थे, मानो यह कह रहे हों कि स्वयं शिव ने प्रकृति का रूप धर कुपित हो सर्वस्व मिट्टी में मिलाने के लिये तांडव किया हो । जहाँ –जहाँ इनके क्रोधित तृतीय नेत्र की दृष्टि पड़ी उस स्थान का अस्तित्व मिटने में दो पल नहीं लगा।

16–17 जून 2013 को उत्तराखण्ड राज्य में हुयी मूसलाधार वर्षा एवं जगह–जगह बादल फटने की वजह से बाढ़, आकस्मिक –बाढ़, भूस्खलन भू–धंसाव, भू–कटाव, पहाड़ों से गिरते पत्थर एवं बोल्डर, इन सबने वास्तव में प्रलयकारी स्थिति पैदा कर दी थी । इस प्रलय में कई जिंदगियां हाथो से निकल गयी, मानवीय सम्पत्ति एवं निर्माण कार्यों का व्यापक नुकसान हुआ साथ ही साथ उत्तराखण्ड के प्रभावित क्षेत्रों की पारिस्थितिकी तक गड़बड़ा गयी ।

© 2019 IJRAR June 2019, Volume 6, Issue 2 www.ijrar.org (E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138)

ISSN-0974-522X
R.N.I.-UPHIN /2008/30056
ISRA Journal Impact Factor-3.817
UGC Approved journal SL No. – 47966 (Previous)

श्रीप्रभुpratibha

Refereed Research Journal of Humanities
Year-10, Volume-4, Part-41
October - December, 2018

Contents

- मोहराजपराजये दार्शनिकज्ञानम्
  शैलकुमारी तिवारी 05-10
- पाण्डुलिपियों का संरक्षण एवं पाठालोचन का महत्त्व
  बबिता निर्मल 11-14
- गीतोक्त द्विविधा इच्छा
  अखिलेन्द्र कुमार झा 15-19
- नागार्जुन के काव्य में जन चेतना
  कृष्णदेव यादव 20-22
- गढ़वाली साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना
  कपिल थपलियाल 23-24
- समकालीन नैतिक दर्शन में प्रकृतिवादी दृष्टि
  श्याम मोहन सिंह 25-31
- पुरुषार्थों की प्रासंगिकता
  विद्याधर मिश्र 32-36
- बुद्ध की शिक्षाओं में निहित जीवन मूल्य
  माधुरी कुशवाहा 37-41
- कुषाण युगीन वैवाहिक जीवनः एक समीक्षात्मक विवेचना
  सुरभि सक्सेना 42-48
- मानवाधिकार शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं उपयोग
  अनिल कुमार सिंह 49-53